Bihar Board Class 11th Hindi Book Notes गद्य Chapter 1 पूस की रात

पूस की रात लेखक परिचय – प्रेमचंद (1880-1936)

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, सन् 1880 ई. को वाराणसी जिले के लमही नामक ग्राम में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। आरम्भ में वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। युग के प्रभाव ने उनको हिन्दी की ओर आकृष्ट किया। प्रेमचंदजी ने कुछ पत्रों का सम्पादन भी किया। उन्होंने सरस्वती प्रेम के नाम से अपनी प्रकाश संस्था भी स्थापित की।

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के प्रथम कथाकार हैं जिन्होंने साहित्य का नाता जन-जीवन से जोड़ा। उन्होंने अपने कथा-साहित्य को जन-जीवन के चित्रण द्वारा सजीव बना दिया है। वे जीवन भर आर्थिक अभाव की विषम चक्की में पिसते रहे। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त आर्थिक एवं सामाजिक वैषम्य को बड़ी निकटता से देखा था। यही कारण है कि जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति का सजीव चिंत्रण उनके उपन्यासों एवं कहानियों में उपलब्ध होता है।

जीवन में निरन्तर विकट परिस्थितियों का सामना करने के कारण प्रेमचंदजी का शरीर जर्जर हो रहा था। देशभक्ति के पथ पर चलने के कारण उनके ऊपर सरकार का आतंक भी छाया रहता था, पर प्रेमचंदजी एक साहसी सैनिक के समान अपने पथ पर बढ़ते रहे। उन्होंने वही लिखा जो उनकी आत्मा ने कहा। वे बम्बई (मुम्बई) में पटकथा लेखक के रूप में अधिक समय तक कार्य नहीं कर सके, क्योंकि वहाँ उन्हें फिल्म निर्माताओं के निर्देश के अनुसार लिखना पड़ता था। उन्हें स्वतन्त्र लेखन ही रुचिकर था। निरन्तर साहित्य साधना करते हुए 2 अक्टूबर, 1936 को उनका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक विशेषताएं-प्रेमचंदजी प्रमुख रूप से कथाकार थे। उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह जन-जीवन का मुँह बोलता चित्र है। वे आदर्शोन्मुखी-यथार्थवादी कलाकार थे। उन्होंने समाज के सभी वर्गों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया पर निर्धन, पीड़ित एवं पिछड़े हुए वर्ग के प्रति उनकी विशेष सहानुभूति थी। उन्होंने शोषक एवं शोषित दोनों वर्गों का बड़ा विशद् चित्रण किया है। ग्राम्य-जीवन के चित्रण में तो प्रेमचंदजी ने कमाल ही कर दिया है। उनकी कपन, गोदान, पूस की रात आदि रचनाएँ शोषण के विरुद्ध मूक विद्रोह की आवाज उठाती है।

उपन्यास-वरदान, सेवा सदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, काया कल्प, निर्मला,
प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान एवं मंगल सूत्र (अपूर्ण)।

कहानी संग्रह-प्रेमचंदजी ने लगभग 400 कहानियों की रचना की। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित हैं।

- नाटक-कर्बला, संग्राम और प्रेम की वेदी।
- निबंध संग्रह-कुछ विचार।

भाषा-प्रेमचंदजी का सम्पूर्ण साहित्य समाज-सुधार एवं राष्ट्रीय भावना से प्रेरित है। उनकी भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। उर्दू शब्दों की स्वच्छता तथा सस्कृत की भावमयी स्निग्ध पदावली ने भाषा को आकर्षक, सरल एवं प्रभावशाली बना दिया है। यही कारण है कि आम जनता और रुचि-सम्पन्न साहित्यकारों-दोनों ने उनके साहित्य का स्वागत किया।

पूस की रात पाठ का सारांश

सहना हल्कू से अपने उधार के पैसे माँगने आया है। हल्कू अपनी पत्नी से रुपये देने के लिए कहता है। उनकी पत्नी यह कहकर मना करती है, घर में केवल तीन रुपये हैं, उनका कम्बल खरीदना है। ठंड की रात में बिना कंबल के खेतों की रखवाली कैसे होगी। वह कहने लगा उसकों पैसा देकर पीछा छुड़ाओं, कंबल के लिए कोई और इंतजार कर लेंगे। मुन्नी (उसकी पत्नी) कहती है कि कहाँ से इंतजाम करोगे, क्या कोई तुम्हे दान देकर जाएगा, हल्कू उसके पैसे देकर अपना पिंड छुड़ाना चाहता है। मुन्नी ने पैसे लाकर हल्कू को दे दिया और कहा कि छोड़ दो ये खेती,

मजदूरी करके अपना गुजार कर लेंगे; किस की धौंस तो नहीं सहनी पड़ेगी। हल्कू ने एक-एक पैसा करके इकट्ठे किए गए रुपये लाकर उसे दे दिया, उसे ऐसा लगा मानो अपना हृदय निकालकर दे दिया हो।

पूस की रात में हल्कू अपने खेत पर ईख के पत्तों की छाटी-सी झोपड़ी
बनाकर उसमें एक खटोला डालकर, रखवाली कर रहा था। सर्दी के
कारण उसको नींद नहीं आ रही थी। उसका कुत्ता जबरा भी वहीं लेटा
सर्दी के कारण कूँ-कूँ कर रहा था। हल्कू अपने सिर को घुटनों में दिए अपने कुत्ते से कहता कि क्या तुझे जाड़ा लग रहा है? तू घर में पुआल पर लेटा रहता, तू ही तो यहाँ आया था, अब ले, ले मजा। कुत्ता कुँ-कुँ करके फिर लेट गया कहीं मालिक को मेरे कारण नींद नहीं आ रही हो।

हल्कू एक-एक कर आठ चिलम पी चुका परंतु उसकों नींद नहीं आ रही थी। वह सोच रहा था कि मेहनत हम करते हैं, मजा दूसरे लोग लूटते हैं। वे अपने घरों में आराम से गरम-गरम गद्दों पर सोते हैं।

हल्कू अपने कुत्ते से बातें करता रहा। कुत्ता मानो कूँ-कू करके हल्कू की बात का जवाब दे रहा हो। जबरा ने अपने पंजे हल्कू के घुटनों के पास रखे, तो उसके उसे गरम-गरम साँस का अनुभव हुआ।

चिलम पीकर हल्कू फिर सोने का प्रयत्न करने लगा परंतु नींद आने का नाम ही न लेती थी। हल्कू ने जबरा का सिर उठाकर अपनी गोद में रख लिया और थपकी देकर उसे सुलाने लगा। हल्कू को इस प्रकार करते एक सुख का अनुभव हो रहा था। जबरा शायद इस सुख को स्वर्ग से भी बढ़कर समझ रहा था। हल्कू की आत्मा में कुत्ते के प्रति कोई घृण का भाव नहीं था। वह इतना तल्लीन होकर शायद अपने आत्मीय को भी गले न लगाता जिस प्रकार उसने जबरा को गले गला रखा था। हल्कू की आत्मा मानो अंदर से प्रकाशित हो गई हो।

तभी जबरा को किसी जानवर की आहट मालूम पड़ी। जबरा बाहर आकर भौंकने लगा। ह के बुलाने पर भी वह नहीं आया। उसका कर्तव्य उसको भौंकन के लिए प्रेरित कर रहा शफी रात गुजर जाने के बाद हवा और तेज हो गई, अब तो ऐसा लगता था कि सर्दी मानों हो ले लेगी। हल्कू ने आकाश की ओर देखकर रात कितनी बाकी है यह अंदाज लगाया।

हल्कू के खेत से थोड़ी दूर पर आमों का एक बाग है। पतझड़ शुरू होने के कारण पेड़ों रोचे काफी पत्ते पड़े हुए थे। हल्कू एक साथ में सुलगता हुआ उपला लेकर अरहर के पौधों। झाड़ू बनाकर पेड़ के नीचे से आम के पत्तों को इकट्ठा करने लगा। उसने थोड़ी देर में ही ..का ढेर लगा दिया। जबरा जमीन पर पड़ी किसी हड्डी को चिचोड़ने लगा।

पत्तियाँ इकट्ठी करके हल्कू ने अलाव जला दिया। वह आज सर्दी को
जलाकर भस्म कर देना चाहता था। हल्कू अलाव के सामने ही बैठकर
तापने लगा फिर उसने अपनी टाँगें फैला लीं। गोल्डेन सीरिज पासपोट

https://www.evidyarthi.in/

वह सोचने लगा इतना इंतजाम पहले कर लेते तो ठंड में तो न मरना पड़ता। अलाव शांत हो चुका था परंतु उसमें गरमी बाकी थी। हल्कू चादर ओढ़कर गरम राख के पास बैठकर गीत गुनगुनाने लगा। उसको आलस्य ने घेर लिया।

जबरा भौंकता हुआ खेत की ओर दौड़ा। हल्कू को ऐसा लगा जैसे खेत में जानवरों का झुंड आया हो, उनकी आवाज स्पष्ट सुनाई दे रही थी, शायद यह नील गायों का झुंड था। हल्कू को उनके खेत चरने की आवाज भी सुनाई दे रही थी, उसने अपने दिल को तसल्ली दी कि जबरा के होते हुए कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता। मुझे भ्रम हो रहा है, वह अपने आपको झूठी तसल्ली देने लगा।

हल्कू को ऐसा लगा कि यह भ्रम नहीं है क्योकि खेत चरने की आवाज स्पष्ट आ रही थी और जबरा भी जोर-जोर से भौक रहा था परंतु हल्कू को अकर्मण्यता ने घेर लिया था, वह लेट गया। सबेरे उसी नींद तब खुली जब धूप चारों ओर खिल गई थी। उसकी पत्नी ने आकर उसको जगाया कि तुम्हारी रखवाली का क्या फायदा हुआ, खेत तो सारी चौपट हो गई। हल्कू ने बहाना बनाया तुम्हें खेत की पड़ी है। मै दर्द के कारण मरते-मरते बचा हूँ। वे दोनों अपने खेत के पास आए, देखा नील गायों ने खेत को पूरी तरह चर लिया था। यह देखकर मुन्नी उदास हो गई। रंतु हल्कू प्रसन्न था कि मजदूरी करके अपना गुजारा कर लेंगे, यहाँ ठंड में खेत की रखवाली हो नहीं करनी पड़ेगी।

पूस की रात कठिन शब्दों का अर्थ

घुड़कियाँ-फटकार, धमकियाँ। स्फूर्ति-फुर्ती। मजूरी-मजदूरी। अकर्मण्य-काम न करने वाला, आलसी। खैरात-मुफ्त। दंदाया-गरमाया। तत्परता- शीघ्रता। कम्मल-कंबल। अरमान-अभिलाषा। हार-खेत-बधार। धधकाना-भड़काना। भारी-भरकम-वजनदार। टाँठे-करारा, दृढ़। डील-आकार। अलाव-जहाँ आग तापी जाती है। पछुआ-पश्चिमी हवा जो जाड़ों में बहुत ठण्डी होती है। मालगुजारी-उपज पर दिया जाने वाला कर। भीषण-भयानक। दोहर-दुहरी चादर। दीर्घ-बड़ा। असूझ-बेवकूफी। श्वान-कुत्ता। मडैया-झोपड़ी।

महत्त्वपूर्ण पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या

1. यह खेती का मजा है और एक-एक भाग्यवान ऐसे पड़े हैं, जिनके पास जाड़ा जाय तो गर्मी से घबराकर भागे ! मोटे-मोटे गद्दे, लिहाफ। मजाल है कि जाड़े की गुजर हो जाय। तकदीर की खूबी है। मजूरी हम करें, मजा दूसरे लूटे!
व्याख्या-
प्रस्तुत गद्यांश मुंशी प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'पूस की रात' शीर्षक कहानी के अन्तर्गत कथा नायक हल्कू द्वारा जबरा के प्रति किया गया कथन है। पूस की एक रात में कड़ाके की ठंड का सामना करते हुए हल्कू अपने खेत में लगी फसल की रखवाली कर रहा है। वह गरीब किसान है, इतना गरीब की जाड़े से बचने के लिए एक कम्बल तक नही खरीद सकता। रखवाली करते समय वह अकेला ही है सिर्फ एक और प्राणी उसके पास है और वह है उसका प्रिय कुत्ता जबरा। एकान्त में हल्कू को जाड़े के कारण जब नींद नहीं आती तो वह कुत्ते से बातें करने लगता है, मानो वह भी मनुष्य की भाँति सारी बाते सुनता, समझता है। जबरे को भी जाड़ा लग रहा था अतः हल्कू जबरे को कल से खेत में नही आने को कहता है। फिर जाड़े के कारण चिलम पीना चाहता है और इसके पूर्व आठ चिलम पी चुका है। किसी तरह उसे रात काटनी है। यह खेती करने की सजा है। लेकिन कुछ लोग समझते है कि खेती करने में मजा-ही-मजा है। वैसे लोगों पर हल्कू व्यंग्य करता है, जो परम्परानुसार समझते है कि

"उत्तम खेती मध्यम बान। निसिद्ध चाकरी. भीख निदान ॥"

किन्तु बात बिल्कुल उलटी है। खेत में अन्न पैदा करने वाला जो कंगाल बना रहता है जबकि वाणिज्य तथा चाकरी करने वाले मौज में रहते हैं। उन्हें जाड़ों में मोटे गद्दों, लिहाफ, कम्बल आदि की कोई कमी नहीं रहती। उनके पास गर्मी इतनी रहती है कि जाड़ा डर से ही भागता रहता है। किसान और मजदूर उत्पादन करते और उसका उपयोग धनी वर्ग करता है। अपना-अपना भाग्य
है। स्पष्ट है कि सामान्य किसानों की भांति हल्क भी भाग्यवादी है।

2. वह अपनी दीनता से आहत न था, जिसने आज उसे इस दशा में पहुँचा दिया ! नहीं, इस अनोखी मैत्री ने जैसे उसकी आत्मा के सब द्वार खोल दिये थे और उसका एक-एक अणु प्रकाश से चमक रहा था।
व्याख्या-
प्रेमचन्द कथा सम्राट के रूप में मान्य हैं। अपनी प्रस्तुत कहानी के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन जीवन की आलोचना की है। भारतीय ग्रामीणों की दरिद्रता ही इस कहानी का विषय है। पूस की रात तो ऐसे ही ठंडी होती है और ठंडी हवा के समय खेतों में सोने का नाम भर लेने से बदन सिहर जाता है, वह भी एक चादर के सहारे। बेचारे हल्कू के पास एक गाढ़े की चादर के अलावा ओढ़ने के लिए कुछ भी नहीं था और उसे खेतों की निगरानी करनी थी। हल्कू को नींद आ रही थी वह ठंड से काँप रहा था। वह चिलम पीने लगता है और दृढ़ निश्चिय करता है कि इस बार वह विछावन पर से नहीं उठेगा।

वह कुत्ते को गोद मैं चिपकाए सो जाने की कोशिश करता है। हल्कू की गरीबी आज यहाँ तक पहुँच गयी है कि वह जानवर के साथ जानवर की तरह लेटने में भी सुख का अनुभव करता है। वही हल्कू है जो पेट काट-काट कर कम्बल के लिए जमा किए गए पैसे सहना के बकाये देने को मजबूर हो जाता है। उसकी पूँजी खेत में लगी फसल है, जिसकी वह निगरानी नहीं कर पाता। इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य के अत्याचार से हारा हुआ मनुष्य प्रकृति से भी हार मान लेता है।

3. उस अस्थिर प्रकाश में बगीचे के विशाल वृक्ष ऐसे मालूम होते थे मानो
उस अथाह अन्धकार को अपने सिरों पर संभाले हुए हों। अन्धकार के
उस अनन्त सागर में यह प्रकाश एक नौका के समान हिलता मचलता
हुआ जान पड़ता था।
व्याख्या-
'पूस की रात' कहानी में हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय कथाकार प्रेमचन्द ने वातावरण की सृष्टि सशक्त बिम्बों के द्वारा की है। कहानी का नायक हल्कू जाड़े की रात में खेत अगोडता है किन्तु पर्याप्त वस्त्रों के अभाव में जाड़े को सहन नहीं कर पाता और बगल के आम के बगीचे में पत्तियाँ जलाकर तापने के उद्देश्य से आता है। अरहर के पौधे की झाड़ बनाकर वह पत्तियाँ बटोरता है और उपले की आग से अलाव जलाता है। अत्यन्त ही अंधकारपूर्ण वातावरण है तथा शीत का आधिक्य इतना है कि वृक्षों के पत्तों के ओस की बँदें धरती पर टप-टप टपक रही हैं। अलाव में अपने टिठुरते हुए हाथ सेंककर हल्कू ठंढ को दूर भगाना चाहता है। जाड़ा किसी पिचाश की भांति उसकी छाती को दबाये हुए था और वह सारी रात अन्धेरे के इसी दानव से संघर्ष करता रहा। अलाव जल गया तो अन्धकार रूपी दानव पर मानो उसने विजय प्राप्त कर ली। जलते हुए अलाव की लपटें वृक्ष की पत्तियों को छूने लगी और उस प्रकाश में पेड़ इस तरह लगते थे. जैसे अन्धकार का बोझ अपने सिर पर सम्भाले हुए हों। चारों ओर अन्धेरा था, मानों अन्धकार को काई विशाल समुद्र लहरा रहा हो। उसमें अलाव की रोशनी इस प्रकार लग रही थीं मानो उस विशाल समुद्र में छोटी नावे हिचकोले ले रही हों।

इसे एक प्रतीक के रूप में लिया जाय तो लगेगा कि यह अंधकार गरीबी का प्रतीक है और अलाव की आग हल्कू का। हल्कू अकेले अलाव की रोशनी की भाँति विशाल अन्धकार से संघर्ष करता है और जिस तरह अलाव अन्ततः बुझ जाता है उसी तरह वह भी पराजित होता है। वह अपनी गरीबी से परेशान होकर थक जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

4. “न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकने ही नहीं आती। मैं कहती हूँ तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते? मर-मर कर काम करो उपज हो तो बाकी दे दो चलो छुट्टी हुयी।” इसकी सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

व्याख्या-

ये पंक्तियाँ प्रेमचन्द रचित चर्चित कहानी ‘पूस की रात’ से ली गयी है। इन पंक्तियों में कहानीकार प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन में व्याप्त गरीबी की विकराल समस्या के साए में पल रही कर्जखोरी, सूदखोरी तथा महाजनी शोषण की सामान्य समस्याओं को साकेतिक किया है। हल्कू .. ने सहना से तीन रुपये कर्ज लिए है, जिसकी वसूली के लिए उसपर बार-बार दबाव पड़ता रहा है। दबाव की वह पीड़ा उसकी पत्नी के लिए असत्य है। वह अपने पति से यह पूछती है कि थोड़ी-सी की जा रही खेती के लिए ही तो कर्ज लेना पड़ता है। अतः वह पति को खीझ भरे स्वर में खेती छोड़ देने के लिए कहती है। खेत में मर-मरकर काम करने से यदि कुछ फसल हाथ भी लगती है तो महाजन उसे देखकर कर्ज की बाकी राशि के लिए टूटते हैं। लगता है उसका जन्म कर्ज चुकाने के लिए ही हुआ है। वह खीझकर कर्ज न चुकाने का निश्चय व्यक्त करती है।